ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम ***विषय- हिन्दी***

दिनांक-23-01-2021 ***कैकेयी का अनुताप***

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

कैकेयी का अनुताप

--मैथिलीशरण गुप्त

निज जन्म जन्म में सुने जीव यह मेरा
“धिक्कार! उसे था महा स्वार्थ ने घेरा”

.....

पागल-सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई-
“सौ बार धन्य वह एक लाल की माई।”

शब्दार्थ जीव-आत्मा; लाल-पुत्र; माई-माता; जना-जन्म दिया।
~~~~~~~~~~

यहाँ कैकेयी के द्वारा पश्चाताप व्यक्त करने पर राम सहित उपस्थित सभाजनों ने उन्हें भरत जैसे पुत्र की माता होने पर धन्य कहा है।

कैकेयी पश्चाताप व्यक्त करते हुए कह रही हैं कि अब तो
जन्म-जन्मान्तर तक मेरी आत्मा यह सुनने के लिए विवश होगी कि अयोध्या की रानी कैकेयी को महा स्वार्थ ने घेरकर ऐसा अनुचित कर्म कराया कि उसने धर्म के मार्ग का त्याग कर अधर्म के मार्ग का अनुसरण किया। कैकेयी की इन बातों को सुनकर राम सहित सभासदों ने एक स्वर में कहा कि भरत जैसे महान् पुत्र रत्न को जन्म देने वाली माता सौ-बार धन्य हैं। अतः । यहाँ सभी लोगों द्वारा एक मत से कैकेयी को निर्दोष कहा जा रहा है।

छात्र कार्य- प्रस्तुत दोहे के अर्थ को लिखें एवं याद करें।

धन्यवाद ।

कुमारी पिंकी 'कुसुम'